mardi 6 mars 2012

**HIN2B-09C**

(Initiation à la littérature hindi moderne)

Cours-5

# दर्द

मोहनदास नैमिशराय (2ème Partie)

अनायास उसी रास्ते पर एक छाया दिखाई दी । हरदेई का अभ्यस्त आँखें उसी तरफ़ थीं । उसने पहचान लिया। बस्ती में प्रवेश करने वाला और कोई नहीं हरभजन ही था। उसका अपना बेटा । कपड़े भी वही थे और चाल ढाल भी । अब तक सुमन कमरे में आकाश के पास चली गई थी। हरदेई बाहर अकेली थी । हरभजन नजदीक आया तो वह पूछ बैठी,

"क्यों हरभजन, इतनी देर कां लग्ग गई? "

बिना कुछ जवाब देये हरभजन अब तक अपना शरीर ठेलते हुए सा कमरे के भीतर आ गया। पत्नी और बेटे ने देखा तो तसल्ली हुई। कमरे में हरदेई पीछे पीछे आ गई थी । वह पुनः पूछने ही वाली थी कि सुमन का आशंका से भरा स्वर उभरा था,

"क्योंजी कहीं किसी से झगड़ा तो नहीं हो गया ? "

कमीज के टूटे बटन केखकर ही सुमन ने सवाल किया था। इस बीच आकाश रसोई में जाकर घड़े का पानी गिलास में ले आया था। बदहवास जैसी स्थिति में हरभजन ने बेटे के हाथ से पानी का गिलास लेकर सूखे हो चले गले में उसे उंडेला था । पानी पीकर धम्म से कुर्सी पर बैठ गया था वह । बिखरे बाल अस्त व्यस्त कपड़े और माथे पर उभर आयी सलवटों ने माँ, पत्नी और बेटे को परेशान कर दिया था। पूछने तक की हिम्मत न हुई थी उनकी। सुमन का सवाल सुनकर भी हरभजन जैसे जवाब देने की स्थिति में नहीं था। उसकी साँसें तेजी के साथ चलने लगी थीं। चेहरे पर पीड़ा के अनगिनत भाव थे । इसके बाद हरदेई का द्रवित स्वर उभरा था ।

"तू बतलाता क्यों नहीं हरभजन?"

हरभजन ने अपनी छाती पर हाथ रखे हुए देखा भर था माँ की ओर । माँ ने बेटे की आँखों में पीड़ा के बहते दरिया को महसूस किया । माथे पर उभर आईं अनगिनत रेखाओं को पढ़ा और उसकी बेचैनी को करीब से जाना। फिर बोली थी वह,

"तुझे दर्द है।"

हरभजन फिर मौन था ।

पुनः हरदेई का स्वर उभरा था,

"मुझे मालुम है, दरदहोने पर भीतू कभी बोलता नहीं, कुछ बतलाता नहीं, बस्स, सैता रैता है...।"

सुनकर हरभजन के मुँह से वेदना से भरा स्वर उभरा था,

"माँ.....।"

हरदेई को कहीं गहरे पीड़ा का अहसास हुआ था । उसकी आँखों में आँसू झिलमिलाने लगे थे। आँखों में आँसू सुमन के भी थे। वह रसोई में जाकर गीले आटे पर कपड़ा रख आई थी । और आकाश ने सामान्य ज्ञान की किताब के खुले पृष्ठों को बंद कर दिया था। उसके भीतर पीड़ा और छटपटाहट उभर आई थी। पिताजी का दर्द उससे देखा न जा रहा था। पहले भी ऐसा ही दर्द उभरा था । बहुत पूछने पर हरभजन ने घर में अपनी व्यथा बतलाई थी। आफ़िस में दस बरस से उनकी पदोन्नति नहीं हो पा रही थी। उनके खिलाफ संयुक्त रूप से यह साजिश थी।

पीड़ा ने अतीत को जैसे कुरेद दिया हो। दादाजी के मृत्यु चित्र आकाश की आँखों के सामने तैर उठे थे। उनकी दुर्घटना में मृत्य हो गई थी। पिताजी उस समय मैट्रिक थे। मैट्रिक होने के बावजूद उन्हें चपरासी का पद मिला था। दादाजी राज्य सरकार की सेवा में चपरासी थे। चपरासी के बदले चपरासीगिरी उन्हें मिल गई थी। यही सरकारी नियम था। ऐसा उन्हें बताया गया था। साथ में आश्वासन भी मिला था पदोन्नति का। जो समाज में नियम था बही सरकार में भी था। पहले ही दिन बड़े बाबू ने झिड़क दिया था।

"चपरासी के बेटे होकर चपरासी नहीं बनोगे तो क्या लाटसाहब बनोगे।"

तभी हरदेई की आवाज़ से व्यथा से भरे आकाश का ध्यान उचट गया था। दादी का स्वर जैसे कुंए से उभरा हो,

"डागडर को बुला ला बेटे।"

हरभजन मना करना चाहता था, पर उसकी आवाज़ गले से बाहर निकल न पा रही थी। पथराई सी आँखों ने देखा, उसका बेटा डाक्टर को लेने चला गया था। उसे दर्द बढ़ने लगा था। सांसें तेजी से चलने लगी थीं । आँखों के भीतर अंगारे दहकने लगे थे। माँ और पत्नी हरभजन की बदलती हालत को टकटकी लगाए देख भर रही थीं। दर्द उनके भीतर भी था । वे सोच रही थी हरभजन का क्यों उसके आफ़िस वालों के साथ झगड़ा होता है। जब भी झगड़ा होता है, तब ऐसी बेचैनी लिये वह घर लौटता है।

यही सवाल स्वयं हरभजन को भी परेशान किये था । जितना वह इस बारे में सोचता, उसे लगता वह अपने जख्मों को कुरेद रहा है। ज़ख्म ही तो थे उसके वे। जिन्हें बार बार मौका पा आफ़िस में छेड़ा जाता था । दस साल में उसकी पदोन्नति तो बहुत पहले ही हो जाना चाहिये थी। वह पिछले सप्ताह मुख्यालय भी हो आया था । जहाँ से उसकी पदोन्नति का पत्र भेज दिया गया था। पर उसके आफ़िस में पत्र नहीं पहूँचा था। अधिक पूछने पर बड़े बाबू आर. के. शर्मा ने गुस्से में जैसे उसके सारे वजूद को हिलाकर रख दिया था । उसे पहली बार पता चला था। जातके सवाल कितने निर्मम होते हैं। और उनके जवाब भी। बड़े बाबू का जवाब भी

तो निर्मम ही था। उसने घृणा के स्वर में कहा था, हरभजन मेरे जीते जी तू इस आफ़िस में बाबू नहीं बन सकता। चपरासीगिरी कर और अपने बच्चों को पाल।

उसके पिता चपरासी, वह चपरासी क्या उसका बेटा भी चपरासी ही बनेगा। यही सोचते हुए हरभजन के सीने में तेज दर्द उठा और पलभर में ही उसका शरीर ठंडा हो गया। दोनों महिलाओं की चीख निकली, जा आसपास के वातावरण को उद्वेलित करते हुए दूर तक चली गई थी। सामने दरवाज़े पर डाक्टर था। आकाश अपलक नयनों से अपने पिता को घूरने लगा था। हड़बड़ाहट में डाक्टर ने दम तोड़ चुके हरभजन के शरीर की धड़कनों को सुनने का प्रयास किया। पर वे सांसें कभी की बंद हो चुकी थीं। हृदय गति रुकने से एक अदद चपरासी की मौत हो गई थी।

सुबह तक आसपास के सभी लोगों को हरभजन के अचानक चल बसने की खबर लग गई थी। बस्ती के हंसते गाते जीवन में खलल पड़ गई थी। बांस की खच्चियाँ अर्थी के लिये बनाई जाने लगीं थी। तभी बड़े बाबू आ गये थे। उनके जाथ में पदोन्नति पत्र था। आँखों में आँसू। उन्हें क्या मालुम था कि उसके कटु शब्द हरभजन की जान ही ले लेंगे। आकाश ने जलती आँखों से बड़े बाबू की ओर देखा और पदोन्नति पत्र लेकर उसे कफ़न के साथ रस्सी से बाँध दिया था।

## Vocabulaire (2ère partie)

ठेलना pousser
तसल्ली करना se réconforter
बदहवास dérangé, perturbé, inconscient
अस्तव्यस्त chaotique
सलवट (f) pli
हिम्मत (f) courage
साँस (f) respiration
अनगिनत innombrable
द्रवित ému
दरिया (m) rivière
वेदना (f)
पीड़ा (f), व्यथा (f) mal, douleur
झिलमिलाना scintiller
छटपटाना se tortiller, être mal à l’aise
पदोन्नति promotion
खिलाफ contre
संयुक्त conjoint, ensemble
साजिश (f) complot
अतीत (m) passé
कुरेदना creuser, gratter, enlever
मृत्यु (f) mort
आश्वासन (m) consolation, assurance
झिड़कना rabrouer, réprimander
चपरासी (m) (peon), serviteur, appariteur
लाटसाहब (m) Lord, autorité supérieure
ध्यान उचटना avoir son attention séparé, détourné de son objet

कुआँ (m) puits
पथराई pétrifié
अंगारा (m) braise
दहकना répandre de la chaleur comme de la braise
टकटकी (f) regard fixe
बेचैनी (f) énervement
जख्म (m), blessure
कुरेदना gratter, piocher
छेड़ना taquiner, provoquer
पदोन्नति (f) promotion
मुख्यालय (m) siège social
वजूद (m) existence
निर्मम sans pitié
बाबू (m) employé
ठंडा होना refroidir, mourir
उद्वेलित débordé
अपलक sans cligner les yeux
घूरना regarder fixement
हड़बड़ाहट (f) agitation soudaine
दम तोड़ना respirer avec difficulté, mourir
चल बसना s’installer ailleurs, mourir
खलल (m) obstacle, difficulté, interruption
अर्थी (f) catafalque
कफ़न (m) linceul
रस्सी (f) corde